सुविचार



जीवन में मत बनो, इस क़दर भी चापलूस। कि स्वजन गलती करे,होते रहो अति खुश।

जीवन चन्द्राकर 'लाल'' बोरसी 52 दुर्ग (छत्तीसगढ़

संपादकीय

ट्रंप का भारतीय इकोनॉमी की तारीफ के मायने

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप जब भारतीय अर्थव्यवस्था की तारीफ करते हैं और भारत की करीब सात प्रतिशत विकास दर को अमेरिकी अर्थव्यवस्था के लिए उदाहरण बताते हैं, तो इसे केवल भारत के प्रति उनके बदले हुए नजरिये के रूप में देखना उचित नहीं होगा। उनकी इस टिप्पणी के पीछे अमेरिकी घरेलू राजनीति, आर्थिक नीतियों और फेडरल रिजर्व के साथ जारी टकराव की पृष्ठभूमि भी है। सवाल यह है कि जिस भारत पर उनके प्रशासन ने टैरिफ संबंधी दबाव बढ़ाया, जिसके नागरिकों के लिए वीजा नीतियां सख्त की गईं, उसी भारत की आर्थिक व्यवस्था अचानक उन्हें इतनी आकर्षक क्यों दिखाई देने लगी? ट्रंप की इस बात में दम है कि भारत में ब्याज दरें कम हैं और जीडीपी सात प्रतिशत की दर से बढ़ रही है। इसके मुकाबले उन्होंने अमेरिकी अर्थव्यवस्था की विकास-दर का जिक्र करते हुए दावा किया कि यदि अमेरिका में भी ब्याज दरें कम रखी जाएं तो विकास दर 14, 15 या 20 प्रतिशत तक पहुंच सकती है। उन्होंने अमेरिकी फेडरल रिजर्व पर राजनीतिक रवैया अपनाने का आरोप लगाते हुए कहा कि अच्छे आर्थिक आंकड़े आने के बावजूद केंद्रीय बैंक ब्याज दरें बढ़ाने की दिशा में काम करता है। ट्रंप का मानना है कि आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा देने और सरकारी कर्ज चुकाने की क्षमता मजबूत करने के लिए ब्याज दरें कम होनी चाहिए। दरअसल, ट्रंप और फेडरल रिजर्व के बीच ब्याज दरों को लेकर मतभेद नया नहीं है। अमेरिकी राष्ट्रपति चाहते हैं कि केंद्रीय बैंक ब्याज दरों में कटौती करे, ताकि कारोबार, निवेश और उपभोग को प्रोत्साहन मिले। दूसरी ओर फेडरल रिजर्व का प्रमुख दायित्व महंगाई को नियंत्रित रखना और रोजगार के स्तर को संतुलित बनाए रखना है। यही वजह है कि वह केवल राष्ट्रपति की इच्छा के अनुरूप ब्याज दरों में बदलाव नहीं कर सकता। मौद्रिक नीति में केंद्रीय बैंक की स्वतंत्रता का उद्देश्य भी यही है कि आर्थिक फैसले राजनीतिक दबाव से प्रभावित न हों। ट्रंप की टिप्पणी के समय अमेरिका में महंगाई का दबाव भी महत्वपूर्ण है। उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार सितंबर में व्यक्तिगत उपभोग व्यय (पीसीई) आधारित महंगाई दर 3.6 प्रतिशत और कोर पीसीई महंगाई दर 3.1 प्रतिशत थी, जबकि फेड का दीर्घकालिक लक्ष्य दो प्रतिशत है। ऐसे में ब्याज दरों में जल्द और बड़ी कटौती महंगाई को फिर बढ़ाने का जोखिम पैदा कर सकती है। इसलिए ट्रंप का यह दावा कि कम ब्याज दरों से अमेरिकी विकास दर सीधे 15 या 20 प्रतिशत तक पहुंच सकती है, एक राजनीतिक और आर्थिक अनुमान है, कोई स्थापित आर्थिक निष्कर्ष नहीं। ब्याज दरें विकास को प्रभावित करती हैं, लेकिन उत्पादकता, निवेश, रोजगार, मांग और वैश्विक परिस्थितियां भी इसमें निर्णायक भूमिका निभाती हैं। भारत की तारीफ को भारत-अमेरिका संबंधों के संदर्भ में भी समझना होगा। ट्रंप के दूसरे कार्यकाल में दोनों देशों के बीच व्यापारिक रिश्तों में टैरिफ को लेकर तनाव पैदा हुआ। अमेरिकी नीतियों का असर भारतीय निर्यातकों और कारोबारियों की योजनाओं पर पड़ा। वीजा नियमों में सख्ती ने भारतीय पेशेवरों और अमेरिका में काम करने की आकांक्षा रखने वाले युवाओं के सामने भी अनिश्चितता बढ़ाई। इसके बावजूद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ ट्रंप की व्यक्तिगत निकटता और उनकी तारीफ के बयान लगातार चर्चा में रहे हैं। कुछ दिन पहले मोदी को टफ मैन कहना और अब भारतीय अर्थव्यवस्था को उदाहरण बनाना इसी सिलसिले का हिस्सा है। लेकिन कूटनीति में व्यक्तिगत प्रशंसा और नीतिगत सहयोग दो अलग-अलग बातें हैं। नेताओं के बीच मित्रता के सार्वजनिक प्रदर्शन से व्यापारिक बाधाएं अपने आप समाप्त नहीं होतीं। भारत के लिए महत्वपूर्ण यह है कि अमेरिकी बाजार तक पहुंच, निर्यात पर शुल्क, तकनीकी सहयोग, निवेश और भारतीय पेशेवरों के वीजा जैसे मुद्दों पर ठोस प्रगति हो। इसी तरह अमेरिका के लिए भारत एक बड़ा बाजार, निवेश का अवसर और वैश्विक आपूर्ति शृंखला में महत्वपूर्ण भागीदार है। दोनों देशों के आर्थिक हित एक-दूसरे से जुड़े हैं, इसलिए आपसी मतभेदों का असर केवल सरकारों तक सीमित नहीं रहता। शेयर बाजारों में अनिश्चितता और सोने-चांदी की कीमतों में उतार-चढ़ाव भी वैश्विक आर्थिक माहौल की संवेदनशीलता को रेखांकित करते हैं। हालांकि इन बदलावों का कारण केवल भारत-अमेरिका संबंधों को नहीं माना जा सकता। वैश्विक ब्याज दरें, भू-राजनीतिक तनाव, निवेशकों की धारणा और मुद्रा बाजार भी इन पर असर डालते हैं। इसलिए ट्रंप की भारतीय अर्थव्यवस्था की तारीफ को उपलब्धि के प्रमाणपत्र से अधिक एक अवसर के रूप में देखना चाहिए। भारत की सात प्रतिशत विकास दर निश्चित रूप से वैश्विक अर्थव्यवस्था में उसकी स्थिति को रेखांकित करती है, लेकिन विकास की निरंतरता के लिए घरेलू निवेश, रोजगार, विनिर्माण और निर्यात को मजबूत करना जरूरी है। भारत को अमेरिकी प्रशंसा से अधिक अपने आर्थिक हितों पर ध्यान देना होगा। वहीं अमेरिका को भी यह समझना होगा कि भारत के साथ संबंध केवल टैरिफ लगाने या तारीफ करने से नहीं चल सकते।

कहानी

बर्फ़ की चादर पर लिखा इश्क़

नवंबर की ठंडी सुबह थी। गुलमर्ग की वादियों ने बर्फ़ की सफ़ेद चादर ओढ़ रखी थी। दूर पहाड़ों पर फैली धुंध, देवदार के पेड़ों से गिरती बर्फ़ और हवा में घुली ठंडक वातावरण को किसी खूबसूरत ख्वाब जैसा बना रही थी। ऐसा लगता था जैसे कुदरत ने अपनी सारी खूबसूरती इसी छोटी-सी वादी में समेट दी हो। इसी खूबसूरत वादी में दिल्ली से आया नीरज पिछले तीन दिनों से ठहरा हुआ था। वह पेशे से लेखक था और अपनी ज़िंदगी की भागदौड़ से परेशान होकर कुछ दिनों की शांति तलाशने गुलमर्ग आया था। लेकिन उसे क्या मालूम था कि इन पहाड़ों के बीच उसे अपनी ज़िंदगी की सबसे खूबसूरत कहानी मिल जाएगी। उस सुबह वह एक छोटे-से कश्मीरी कैफ़े में बैठा खिड़की से बाहर गिरती बर्फ़ देख रहा था। तभी दरवाज़ा खुला और एक लड़की अंदर आई। उसने नीले रंग की फिरन पहन रखी थी और सिर पर सफ़ेद दुपट्टा था। उसके चेहरे पर एक अजीब-सी मासूमियत थी। वह काउंटर पर पहुँची और कहने लगी, 'भाई साहब, एक कप कहवा देना।' नीरज की नज़र अनायास उसकी तरफ़ उठ गई। लड़की ने कहवा लिया और खिड़की के पास खाली पड़ी कुर्सी पर बैठ गई। कुछ देर बाद नीरज ने हिम्मत जुटाकर पूछा, 'अगर आप बुरा न मानें तो एक बात पूछूँ?' लड़की ने उसकी तरफ़ देखा, 'जी, पूछिए।' 'आप यहीं रहती हैं?' 'जी, गुलमर्ग में ही। और आप?' 'दिल्ली से आया हूँ।' लड़की मुस्कुराई, 'अच्छा! तो पहली बार कश्मीर आए हैं?' 'जी, पहली बार। लेकिन लगता है जैसे इस जगह से कोई पुराना रिश्ता है।' 'ऐसा ही होता है। कश्मीर एक बार किसी को अपना बना ले तो फिर उसे आसानी से जाने नहीं देता।' नीरज हँस पड़ा। 'लगता है आप कश्मीर की बहुत बड़ी प्रशंसक हैं।' 'प्रशंसक नहीं, यह मेरी जन्मभूमि है। इससे मोहब्बत करना तो बनता है।' उसका नाम शहनाज था। उस दिन की मुलाकात कुछ मिनटों की थी, लेकिन नीरज के मन में उसकी मुस्कान देर तक ठहरी रही। अगले दिन नीरज फिर उसी कैफ़े में पहुँचा। शहनाज वहाँ पहले से बैठी थी। उसे देखते ही मुस्कुराकर बोली, 'आज फिर कहवा पीने आए हैं या गुलमर्ग की खूबसूरती देखने?' नीरज ने कुर्सी खींचते हुए जवाब दिया, 'कल तक तो खूबसूरती देखने आया था, आज शायद किसी से मिलने आया हूँ।' शहनाज ने मुस्कुराकर पूछा, 'किसी से?' 'जी, एक लड़की से, जो कल इसी जगह मिली थी।' शहनाज ने हँसते हुए कहा, 'आप दिल्ली वाले बड़ी जल्दी बातें बनाना सीख जाते हैं।' 'बातें बनाना नहीं जानता, बस जो महसूस करता हूँ, कह देता हूँ।' धीरे-धीरे दोनों की मुलाकातें बढ़ने लगीं। कभी वे गुलमर्ग के बर्फ़ीले रास्तों पर टहलते, कभी गोंडोला की सवारी करते और कभी घंटों बैठकर पहाड़ों को निहारते रहते। नीरज को अब गुलमर्ग की खूबसूरती से अधिक शहनाज का साथ अच्छा लगने लगा था। एक दिन दोनों अफ़रवात की पहाड़ियों के पास बैठे थे। सामने दूर-दूर तक फैली बर्फ़ चमक रही थी। शहनाज ने चुप्पी तोड़ते हुए पूछा, 'नीरज, तुम्हें यहाँ सबसे अच्छी चीज़ क्या लगती है?' नीरज ने उसकी तरफ़ देखा और कहा, 'पहले तो ये पहाड़, ये वादियाँ और ये बर्फ़ अच्छी लगती थी। लेकिन अब लगता है कि इस जगह की सबसे खूबसूरत चीज तुम हो।' शहनाज ने नज़रें झुका लीं। 'तुम हर बात में इतनी खूबसूरती कैसे ढूँढ लेते हो?' 'शायद तुम्हारे मिलने के बाद मेरी नज़र बदल गई है।' शहनाज कुछ देर खामोश रही। फिर बोली, 'नीरज, तुम जानते हो न कि तुम यहाँ हमेशा नहीं रह सकते?' 'जानता हूँ।' 'तुम्हारी दुनिया दिल्ली में है। तुम्हारा काम, तुम्हारे दोस्त और तुम्हारा परिवार सब वहीं है।' नीरज ने धीरे से कहा, 'और क्या पता अब मेरी दुनिया का एक हिस्सा गुलमर्ग में भी बस गया हो।' शहनाज ने उसकी ओर देखा। उसकी आँखों में एक अनकहा सवाल था। नीरज ने उसका हाथ अपने हाथों में लेते हुए कहा, 'शहनाज, मैं तुमसे कुछ कहना चाहता हूँ। शायद यह बात मुझे बहुत पहले कह देनी चाहिए थी। मुझे तुम से मोहब्बत हो गई है।' शहनाज की आँखें नम हो गईं। उसने धीमे स्वर में कहा, 'नीरज, मुझे भी तुम्हारा इंतज़ार रहने लगा है। तुम्हारे आने से



पहले यह वादी खूबसूरत थी, लेकिन अब तुम्हारे बिना अधूरी लगती है। 'न रिज ने मुस्कुराकर पूछा, 'तो क्या इसे मोहब्बत समझूँ?' शहनाज ने जवाब दिया, 'अगर तुम्हें यक़ीन है कि यह सिर्फ़ कुछ दिनों का आकर्षण नहीं है, तो इसे मोहब्बत समझ सकते हो।' नीरज ने उसका हाथ और कसकर थाम लिया। कुछ ही दिनों बाद नीरज की दिल्ली वापसी का दिन आ गया। स्टेशन के लिए निकलने से पहले वह शहनाज से मिलने पहुँचा। दोनों उसी पुराने कैफ़े में बैठे थे, जहाँ पहली बार उनकी मुलाकात हुई थी। शहनाज ने पूछा, 'कब लौटोगे?' नीरज ने कहा, 'बहुत जल्द।' 'यह बहुत जल्द कितना होता है?' 'इतना कि तुम्हारा इंतज़ार लंबा न हो।' शहनाज ने मुस्कुराने की कोशिश की, लेकिन उसकी आँखें उसका साथ नहीं दे रही थीं। 'नीरज, एक बात कहूँ?' 'कहो।' 'मुझे बड़े-बड़े वादों से डर लगता है। लोग अक्सर मोहब्बत में बहुत कुछ कह जाते हैं, लेकिन वक़्त के साथ सब भूल जाते हैं।' नीरज कुछ पल उसे देखता रहा। फिर बोला, 'मैं तुम्हें कोई ऐसा वादा नहीं दूँगा जिसे पूरा करना मेरे बस में न हो। बस इतना कह सकता हूँ कि जहाँ भी रहूँगा, तुम्हें अपनी ज़िंदगी से अलग नहीं होने दूँगा।' शहनाज ने उसका हाथ पकड़ लिया। 'मुझे बस इतना ही चाहिए।' नीरज दिल्ली लौट गया, लेकिन अब उसकी ज़िंदगी पहले जैसी नहीं रही थी। हर सुबह वह शहनाज से बात करता और हर शाम उसे गुलमर्ग की याद आती। दोनों घंटों फोन पर बातें करते। कभी शहनाज उसे बर्फ़बारी के बारे में बताती, कभी नीरज दिल्ली की भागदौड़ के किस्से सुनाता। लेकिन धीरे-धीरे ज़िंदगी की व्यस्तताओं ने उनके बीच दूरियाँ बढ़ानी शुरू कर दीं। नीरज अपने काम में उलझता गया और शहनाज अपने परिवार की ज़िम्मेदारियों में। बातचीत कम होने लगी। कई बार फोन बजता रहता और जवाब नहीं आता। एक रात शहनाज ने फोन पर कहा, 'नीरज, क्या तुम्हें कभी लगता है कि हम धीरे-धीरे एक-दूसरे से दूर हो रहे हैं?' नीरज ने थके हुए स्वर में कहा, 'ऐसा कुछ नहीं है, शहनाज। बस काम थोड़ा बढ़ गया है।' 'मैं समझती हूँ, लेकिन कभी-कभी तुम्हारी आवाज़ सुनने के लिए भी इंतज़ार करना पड़ता है।' नीरज चुप हो गया। शहनाज ने फिर कहा, 'मैं तुमसे कोई शिकायत नहीं करना चाहती। बस इतना चाहती हूँ कि तुम्हें कभी मेरी कमी महसूस हो।' नीरज ने जवाब दिया, 'तुम्हारी कमी हर दिन महसूस होती है, शहनाज। बस कह नहीं पाता।' फोन कट गया, लेकिन दोनों के दिलों में कई बातें अधूरी रह गईं। करीब पाँच साल बीत गए। एक दिन नीरज ने अपनी मेज की दराज़ खोली। उसमें गुलमर्ग की कुछ तस्वीरें रखी थीं। एक तस्वीर में शहनाज बर्फ़ के बीच खड़ी मुस्कुरा रही थी। नीरज देर तक उस तस्वीर को देखता रहा। उसे अचानक महसूस हुआ कि उसने अपनी ज़िंदगी में बहुत कुछ हासिल किया, लेकिन जिस चीज़ की सबसे अधिक चाहत थी, उसे ही पीछे छोड़ दिया। अगली सुबह उसने गुलमर्ग जाने का फैसला कर लिया। नवंबर का महीना था। पहाड़ों पर पहली बर्फ़बारी हो चुकी थी। नीरज उसी पुराने कैफ़े में पहुँचा। कैफ़े का मालिक उसे देखकर पहचान गया। उसने मुस्कुराकर पूछा, 'साहब, बहुत दिनों बाद आए हैं।' नीरज ने



पूछा, 'शहनाज आती है यहाँ?' 'मालिक ने कुछ पल उसे देखा, फिर बोला, 'हाँ साहब, आती तो है। हर साल पहली बर्फ़बारी पर। कहती है कि उसे किसी का इंतज़ार है।' नीरज की आँखें नम हो गईं। वह तुरंत कैफ़े से बाहर निकला और उसी रास्ते पर चलने लगा, जहाँ कभी वह और शहनाज साथ घूमा करते थे। कुछ दूर जाने पर उसे देवदार के पेड़ों के नीचे एक परिचित चेहरा दिखाई दिया। नीली शॉल ओढ़े शहनाज बर्फ़ से ढके रास्ते पर खड़ी थी। नीरज धीरे-धीरे उसके पास पहुँचा। शहनाज ने उसे देखा तो कुछ पल के लिए जैसे उसकी साँसें थम गईं। 'नीरज... तुम?' नीरज ने मुस्कुराते हुए कहा, 'हाँ, मैं।' शहनाज की आँखों से आँसू बहने लगे। 'इतने साल बाद याद आई तुम्हें गुलमर्ग की?' नीरज ने सिर झुका लिया। 'गुलमर्ग तो हर दिन याद आता था, शहनाज। लेकिन आज समझ आया कि कुछ जगहों पर सिर्फ़ यादों के सहारे नहीं जिया जा सकता। वहाँ लौटना भी पड़ता है।' इ हानाज ने पूछा, 'और अब कितने दिनों के लिए आए हो?' 'नीरज ने उसकी आँखों में देखते हुए कहा, 'इस बार दिनों का हिसाब लेकर नहीं आया हूँ।

अगर तुम चाहो तो अपनी बाकी ज़िंदगी यहीं बिताना चाहता हूँ।' शहनाज कुछ देर खामोश रही। फिर बोली, 'नीरज, क्या सचमुच तुम्हें लगता है कि इतने सालों बाद भी सब पहले जैसा हो सकता है?' नीरज ने उसका हाथ थाम लिया। 'नहीं शहनाज, सब पहले जैसा नहीं होगा। हम दोनों बदल चुके हैं, वक़्त बदल चुका है। लेकिन एक बात आज भी वैसी ही है।' 'क्या?' 'मैं आज भी तुम्हें उतनी ही मोहब्बत करता हूँ, जितनी उस दिन करता था, जब पहली बार तुम्हें इस कैफ़े में देखा था।' शहनाज की आँखों में आँसू थे, लेकिन इस बार उसके होंठों पर मुस्कान भी थी। उसने धीरे से कहा, 'मैंने तुम्हारा इंतज़ार करना कभी छोड़ा ही नहीं।' नीरज ने उसे अपने सीने से लगा लिया। चारों तरफ़ बर्फ़ गिर रही थी। देवदार के पेड़ खामोश खड़े थे और दूर पहाड़ों पर धुंध उतर रही थी। कुछ देर बाद शहनाज ने उसके सीने से सिर उठाकर पूछा, 'नीरज, एक बात बताओ। तुम्हें गुलमर्ग इतना पसंद क्यों है?' नीरज मुस्कुराया और बोला, 'क्योंकि यहाँ पहाड़ हैं, बर्फ़ है, खूबसूरत वादियाँ हैं।' शहनाज ने हँसते हुए कहा, 'और?' नीरज ने उसकी आँखों में झाँकते हुए जवाब दिया, 'और यहाँ तुम हो।' उस दिन गुलमर्ग की वादियों में एक पुरानी प्रेम कहानी को नया जीवन मिल गया। शाम ढलने लगी थी। पहाड़ों के पीछे सूरज की आख़िरी किरणें धीरे-धीरे खो रही थीं। दोनों हाथों में हाथ डाले अपने पुराने रास्ते पर चल पड़े। नीरज ने चलते-चलते कहा, 'शहनाज, अब कभी तुम्हें अकेला नहीं छोड़ूँगा।' शहनाज ने मुस्कुराकर जवाब दिया, 'मुझे अकेलेपन से डर नहीं लगता, नीरज। मुझे डर सिर्फ़ इस बात का था कि कहीं तुम मुझे भूल न जाओ।' नीरज ने उसका हाथ चूमते हुए कहा, 'कुछ लोग याद नहीं किए जाते, शहनाज। वे दिल में रहते हैं।' और गुलमर्ग की उस बर्फ़ीली शाम में दो दिलों ने फिर से एक-दूसरे का साथ चुन लिया। बाहर बर्फ़ गिरती रही, लेकिन उनके भीतर मोहब्बत का एक नया मौसम आ चुका था।

यशपाल निर्मल
संस्थापक अध्यक्ष
जम्मू-कश्मीर हिन्दी अकादेमी,
तहसील- खौड़ (अखनूर)
जम्मू-181202

कहानी

तराजू

वर्मा साहब, कभी-कभी लगता है ज़िंदगी ने हमारे साथ न्याय नहीं किया।' रात के लगभग साढ़े दस बजे थे। सेवानिवृत्त अधिकारी रघुवीर माथुर का फोन उनके पुराने सहकर्मी अरुण वर्मा के पास आया। 'क्या हुआ माथुर साहब?' 'कुछ नहीं... बस आज एक पुराने कर्मचारी से मुलाकात हुई। कभी मेरे सामने फाइलें लेकर खड़ा रहता था। आज अपनी गाड़ी में आया, बड़ा बंगला है, कारोबार है। मुझे देखकर ऐसे मुस्कराया जैसे कोई पुराना हिसाब बराबर कर रहा हो।' वर्मा कुछ क्षण चुप रहे, फिर बोले, 'आपने अपना हिसाब कभी अपनी ज़िंदगी से भी लगाया है या हमेशा दूसरों की ज़िंदगी से ही करते रहे?' माथुर हँसे नहीं। वर्मा ने कहा, 'आपके दोनों बच्चे अपने पैरों पर खड़े हैं। बेटी डॉक्टर, बेटा विदेश में प्रतिष्ठित कंपनी में। घर है, पेंशन है, समाज में सम्मान है। फिर किस बात की कमी रह गई?' 'बस यही कि जो लोग मुझसे नीचे थे, वे आज ऊपर हैं।' 'ऊपर कहाँ है, माथुर साहब? किसी की मंजिल ऊँची हो सकती है, किसी की इमारत बड़ी; लेकिन ज़िंदगी का मापदंड एक



ही क्यों होना चाहिए?' बात वहीं समाप्त हो गई। कुछ दिन बाद वर्मा ने माथुर साहब का सोशल मीडिया देखा। उनकी तस्वीर किसी अस्पताल के गलियारे की थी। नीचे लिखा था– 'कठिन समय में प्रार्थनाओं की आवश्यकता है।' वर्मा ने फोन किया। जवाब नहीं मिला। कुछ देर बाद संदेश आया– 'पत्नी अस्पताल में है। हृदय की गंभीर समस्या है। डॉक्टरों ने ऑपरेशन बताया है।' साथ में अस्पताल की रिपोर्ट थी। वर्मा देर तक उस रिपोर्ट को देखते रहे। जिस आदमी को कुछ दिन पहले दूसरों की तरक्की चुभ रही थी, आज वह अपनी पत्नी की साँसों के लिए प्रार्थना कर रहा था। उन्हें अचानक लगा, जीवन भी कितना विचित्र लेखाकार है। हम दूसरों की कमाई गिनते रहते हैं, वह हमारी साँसों का हिसाब रखता है। अगली सुबह माथुर साहब का फोन आया। 'ऑपरेशन सफल रहा, वर्मा जी। अब खतरे से बाहर हैं।' वर्मा ने राहत की साँस ली। माथुर साहब कुछ देर चुप रहे, फिर बोले– 'कल रात जब डॉक्टर ने कहा कि अब चिंता की बात नहीं, तो मुझे लगा जैसे ज़िंदगी ने मेरी सारी शिकायतें सुनकर उन्हें रद्द कर दिया हो। मैं जिन लोगों से पीछे रह जाने का दुख पाल रहा था, वे सब अचानक बहुत दूर हो गए। मेरे लिए तो उस क्षण मेरी पत्नी का जीवित होना ही दुनिया की सबसे बड़ी उपलब्धि थी।

' वर्मा ने धीरे से कहा, 'अब अपना तराज़ू बदल लीजिए, माथुर साहब। जिस पर ज़िंदगी तौली जाती है, उसमें पद और पैसा नहीं, अपनों की सलामती रखी जाती है।' फोन के दूसरी तरफ कुछ क्षण मौन रहा। फिर माथुर साहब बोले, 'आज पहली बार लगा कि मैं गरीब नहीं हूँ। बस अब तक गलत चीजों की कीमत लगाता रहा।

बेबाक बोल एस. पी. सिंह: बलदेव नगर, अंबाला

नादान का बचपना..



इकलौता बेटा ख़ानदानी रईस! सुविधाओं में बने रहने का चस्का। मिथुन (मां जिज्ञासा से) ' क्या मम्मा, आप भी ! मुझे छोटी-छोटी बातों में टोकती रहती हो। अब मैं बड़ा हो गया हूं।' जिज्ञासा ' बेटा मिथुन, मुझे मालूम है तुम बहुत समझदार हो। सिचुएशन को अपने हिसाब से हैंडल कर लेते हो।.. फिर भी।' मिथुन ' किसी दिन सबके सामने ऊल्टा सीधा कह दूंगा फिर मत कहना।' जिज्ञासा 'बुरा मत मान बेटा। मां हूं ना। मुझे तेरे भविष्य की चिंता रहती है।' हैप्पी न्यू ईयर पार्टी परवान चढ़ जाती है। खाने, पीने, नाच-गाने के साथ बातचीत का सिलसिला फिर शुरू हुआ। माइकल (मिथुन से) ' आजकल तो देश विदेश सोशल मीडिया, टेलीविजन, समाचार पत्रों में बहुत धूम मचा रहे हो।

' मिथुन ' मैंने अपने परिवार में पापा मम्मा को जिस रूप में देखा, उसका हुबहू बखान किया। इसमें आश्चर्य की क्या बात है? बचपन में उनकी हर गतिविधि पर पैनी नजर रहती थी। उन्हें तो भनक तक नहीं लगने देता था। ' जिज्ञासा (चिढ़कर) ' छोड़ो भी। अधेड़ हो गया,लेकिन इसका बचपना गया नहीं। कौन-सी बात किसको कहना इसका सलिका नहीं। ' मिथुन 'अरे मम्मा,आपने फिर बीच में टांग अड़ा दी। नादान बच्चों के सामने पेरेंट्स को कैसा रहना चाहिए इसका आपको भी तक ज्ञान नहीं है।' न्यू ईयर की पार्टी समाप्त हो गई। बातचीत का सिलसिला थम गया। सभी अपने-अपने घरों की ओर चल पड़े। माइकल(मित्र से) ' बेटे का बचपना तो समझ में आ रहा, लेकिन मम्मा-पापा को भी बच्चों के सामने अपनी मर्यादा का ख्याल रखना चाहिए। '

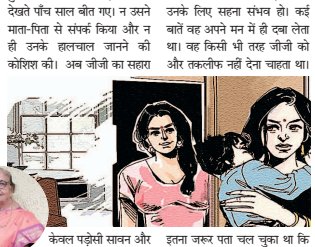
रमेशचन्द्र शर्मा
कृष्णानगर-इंदौर

कहानी

औलाद

शिवानी जीजी को अस्पताल में भर्ती हुए आज दस दिन हो गए थे। पुरानी बातें दोहराते-दोहराते अब वे थक चुकी थीं। उनके अतीत ने जैसे अपने दरवाजे बंद कर लिए थे और वर्तमान अंतिम साँसें गिन रहा था। वे अब मौन हो गई थीं। बीच-बीच में आँखें खोलतीं और अस्पष्ट शब्दों में कुछ कहने का प्रयास करतीं। उनकी बेचैनी साफ दिखाई दे रही थी। सावन ने जीजी का हाथ अपने हाथों में लेते हुए कहा, 'जीजी, किनू बेटी आपसे मिलने आ रही है। आप जल्दी स्वस्थ हो जाइए।

' अचानक जीजी ने पूरी आँखें खोल दीं। उनकी आँखों से आँसू बहने लगे। उन झरते आँसुओं में न जाने कितनी अनकही बातें छिपी थीं। किनू जीजी की इकलौती बेटी थी। लाड़-प्यार में पली-बढ़ी किनू की चहल-पहल से घर हमेशा गुलजार रहता था। जीजी और उनके पति ने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि एक दिन उनकी लाड़ली बेटी उनसे इतनी दूर चली जाएगी। किनू की याद में उसके पिता बीमार रहने लगे और अंततः इस दुनिया से विदा हो गए। अब अकेली रह गईं जीजी समझ नहीं पा रही थीं कि बाकी ज़िंदगी कैसे बिताएँ। किनू के घर छोड़कर जाने का कारण भी इतना बड़ा नहीं था कि कोई रास्ता ही न निकल सके। आखिर हर इंसान को अपनी ज़िंदगी के फैसले लेने का अधिकार है। कहते हैं न, हर आत्मा का अपना-अपना पार्ट होता है। राकेश एक होनहार युवा था और किनू का जिगरी दोस्त भी। धीरे-धीरे उनकी दोस्ती प्रेम में बदली और फिर विवाह का निर्णय लिया। लेकिन राकेश की शूद्र जाति का होना जीजी और उनके पति को स्वीकार नहीं था। वे अपनी पढ़ी-लिखी बेटी के लिए किसी संपन्न परिवार का ऊँचा घराना चाहते थे। उनकी इच्छा थी कि उनकी प्यारी बेटी शानदार हवेली में सुख-सुविधाओं के बीच जीवन बिताए। लेकिन भाग्य को कुछ और ही मंजूर था। एक दिन किनू बिना बताए राकेश के साथ अपनी नई दुनिया बसाने चली गई। देखते-देखते पाँच साल बीत गए। न उसने माता-पिता से संपर्क किया और न ही उनके हालचाल जानने की कोशिश की। अब जीजी का सहारा



केवल पड़ोसी सावन और उसकी पत्नी सीमा थे। नेकदिल सावन ने जीजी की देखभाल में कभी कोई कमी नहीं रखी। वे दोनों ही जीजी को अपनी माँ का दर्जा दे चुके थे। सावन लगातार किनू की खोजबीन भी कर रहा था। लोगों से किनू के बारे में इतना जरूर पता चल चुका था कि किनू अब इस शहर में नहीं रहती। जीजी के कराहने की आवाज सुनकर सावन चौंक उठा। नर्स ने उन्हें दवाई देते हुए सावन से कहा, 'इनका ध्यान रखिएगा।' नर्स की बात सुनकर सावन सतर्क हो गया। डॉक्टर से जीजी के सेहत पर विस्तार पूर्वक बातचीत करना उचित समझा। उसने अपनी पत्नी सीमा को जीजी के पास बैठाया और डॉक्टर से मिलने चला गया। कुछ देर बाद जीजी ने आँखें खोलीं। सीमा का हाथ अपने हाथ में लेकर वे धीमे स्वर में बोलीं, 'बेटी किनू, मुझे माफ कर देना। यह धन-दौलत सब तेरे लिए ही इकट्ठी की थी। अब तू ही इसे सँभालना। लगता है भगवान बुला रहे हैं। उन्हें मना तो नहीं कर सकते न! एक दिन सबको जाना ही पड़ता है।' इतना कहकर जीजी मुस्कराईं और सीमा की आँखों में देखने लगीं। उन आँखों में उन्हें अपनी बेटी किनू की ही छवि दिखाई दे रही थी।

उन्होंने अपने झोले की ओर इशारा किया। तभी सावन भी वहाँ आ गया। जिस झोले को सावन ने आज तक खोलकर नहीं देखा था, उसमें जीजी ने अपनी जायदाद के महत्वपूर्ण कागजात सँभालकर रखे थे। जीजी ने झोला सावन की ओर बढ़ाते हुए कहा, 'सावन, ये लो, इसे सँभालकर रखना। अब मैं जा रही हूँ।' सावन ने तुरंत कहा, 'नहीं जीजी, ऐसी बातें मत कीजिए। विश्वास रखिए, किनू का पता चलते ही ये कागजात उसे सौंप दूँगा।' जीजी ने बड़ी कठिनाई से बोलते हुए कहा, 'नहीं बेटा, जो आखिरी साँस तक साथ निभाते हैं, वही सच्चे बेटे-बेटियाँ होते हैं। ध्यान रखना, किसी से इतना मोह मत करना कि उसके अलग होने का वियोग ही सहन न कर सको।' उनकी आवाज लड़खड़ाने लगी। आँखों से आँसू बहने लगे। फिर सावन और सीमा की ओर देखते हुए बोलीं, 'भगवान तुम जैसी औलाद सबको दे!' जीजी की आँखों से आँसू लगातार बह रहे थे। जीवन भर जिस बेटी के लौटने की प्रतीक्षा में उन्होंने अपनी आँखें बिछाए रखीं, आज उसी की जगह किसी और ने ले ली थी। जीवन का सारा दर्द वे अपने साथ समेटकर ले जाना चाहती थीं। शायद आज उन्हें समझ आ गया था कि औलाद केवल जन्म देने से नहीं, बल्कि रिश्ते निभाने और अंतिम समय तक साथ देने से बनती है।

अमिता मराठे